मक्के की वैज्ञानिक खेती

राँची में 2015-16 में 11193 हे. क्षेत्र में मक्का की खेती की गयी। जिसकी उत्पादकता 1137 कि.ग्रा. प्रति हे. थी।

खेत की तैयारी : खेत को मिट्टी पलट हल से एक बार जोताई करने के बाद 3-4 बार देशी हल से जोताई करके कम्पोस्ट खाद को पहले से मिला देना चाहिए। उर्वरक की मात्रा को अन्तिम जोताई के समय खेत में मिला दिया जाता है।

उन्नत प्रभेद : क) खरीफ : संकर किस्में : शक्तिमान-1 (40-45 क्विं./हे.) सफेद, शक्तिमान-2 (45-50 क्विं./हे.) सफेद, पूसा अगस्त, संकर मक्का-3 (40-45 क्विं./हे.0 पीला, गंगा-11 (40 क्विं./हे.) नारंगी पीला। **संकुल किस्में :** सुआन (40-45 क्विं./हे.) पीला, देवकी (45 क्विं./हे.) सफेद।

ख) स्वीट कार्न : सूगर 75, 74, गोल्डेन हनी प्रिया माधुरी, स्वीट पर्ल, अल्मोड़ा स्वीट कार्न।

ग) संकुल किस्में : देवकी (45-50 क्विं./हे.) सफेद-लक्ष्मी (40-45 क्विं./हे.) सफेद, सुआन (35-40 क्विं./हे.) पीला, बेबी कार्न प्रकाश, एच.एम.-4

औसत उपज : खरीफ में 40-45 क्विं./हे. संकर किस्में, 35 क्विं./हे. संकुल किस्में से प्राप्त होते हैं।

बोआई : खरीफ : 25 मई से 30 जून।

दूरी : अल्पकालीन प्रभेद : 60×20 सें.मी., दीर्घकालीन प्रभेद : 75×25 सें.मी। खेत में नमी रहने पर ही बोआई करें।

बीज दर : 20 किलोग्राम प्रति हे.। प्रति किलोग्राम देशी बीज को 2.5 ग्राम कैप्टाफ या थीरम द्वारा उपचारित कर बोआई करें तथा संकर 16 किलो/हे., स्वीट कार्न तथा बेबी कार्न 8-10 कि./हे. की दर से प्रयोग करें।

बीज बोने की गहराई : 3-5 सें.मी. तक। रबी : 4-5 सें.मी.। बीज और खाद को अलग नालियों में दें।

उर्वरक की मात्रा (कि.ग्रा./हे. पोषक तत्व) **:** उर्वरक 120:60:40 एन.:पी.:के. कि.ग्रा./हे. अर्थात् बोआई के समय 132 कि.ग्रा. डी.ए.पी., 80 कि.ग्रा. यूरिया तथा +67 किलोग्राम एम.ओ.पी. तथा बोआई के 30 दिन बाद 65 किलोग्राम यूरिया तथा धनबाल निकलते समय 65 किलोग्राम पुनः यूरिया का प्रयोग करते हैं।

सिंचाई : रबी एवं गरमा : 5-6 सिंचाई। मोचा निकलने से दाना बनने तक खेत में पर्याप्त नमी का रहना अत्यन्त आवश्यक है। खेत में नमी बनाये रखें। खरीफ में सिंचाई की आवश्यकता प्रायः नहीं पड़ती है। खरीफ में जल निकास का प्रबंध रखें। सूखा पड़ने पर दाना में दूध बनते समय नमी के लिए सिंचाई अवश्य करें।

निकाई-गुड़ाई : बोआई के दूसरे दिन ही तृणनाशक दवा एट्राजीन 50% (2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर) का जमीन की सतह पर समान रूप से छिड़काव करें। जिस खेत में तृणनाशक दवा का छिड़काव नहीं किया गया हो उस खेत में मक्का की कतारों के बीच खुरपी से निकौनी करें तथा नेत्रजन का प्रथम उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ा दें।

मिश्रित खेती : मक्का+मटर, मक्का+झिंगनी, मक्का+उड़द, मक्का+लोबिया (बोदि)। मक्का+अरअर। मक्का+मूंगफली।

मक्के का पौध संरक्षण

कीट नियंत्रण : तना छिद्रक कीट : 2-3 पत्तियों की अवस्था में कीट के लक्षण दिखाई पड़ते ही डेल्टामेथ्रीन 0.001% का छिड़काव करें। 6-8 पत्तियों की अवस्था में कीट के लक्षण दिखाई पड़ने पर कार्बोफ्यूरान 3जी 7 कि.ग्रा./हे. की दर से पौधों के गाभा में डालें। **आरोही कजरा पिल्लू :** फोरेट (थिमेट) 10 जी. 5 कि.ग्रा./हे. या कार्बोफ्यूरान (फ्यूराडान) 3 जी. 7 कि.ग्रा./हे. की दर से मक्का के पौधों के गाभा में डालें। दानेदार दवा का प्रयोग 6-7 पत्तियों की अवस्था में ही करें।

रोग नियंत्रण : पत्रलांछन : रोग प्रगट होने पर प्रति हेक्टर के लिए कवकनाशी डाइथेन एम.-45 या इन्ट्राकोल दवा की 2.5 कि.ग्रा. मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। **स्टाक रॉट :** खड़ी फसल पर रोग देखते ही प्रति हेक्टर के लिए ब्लीचिंग पाउडर की 4 कि.ग्रा. मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर मिट्टी की सतह से बाली तक छिड़काव करें। **हरदा :** रोग देखते ही कवकनाशी डाइथेन एम.-45 (प्रति हेक्टर के लिए 2.5 किलोग्राम दवा को 1000 लीटर पानी में घोलकर) का छिड़काव 15 दिनों पर आवश्यकतानुसार दो बार करें। **उकठा :** बीजोपचार कैप्टॉफाल, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से करें। फसल चक्र अपनायें।

सूत्रकृमि नियंत्रण : मक्का को बार-बार एक ही खेत में नहीं लगाना चाहिए। इससे सूत्रकृमि की संख्या में बड़ी तेजी से वृद्धि होती है। सरसों, तिल, चना आदि को मक्का के साथ फसल चक्र में अपनाने से सूत्रकृमि की संख्या में कमी होती है तथा उपज में भी वृद्धि होती है। बोआई के समय प्रति हेक्टर के लिए कार्बोफ्यूरॉन एक किलोग्राम मूल तत्व दवा का खेत में व्यवहार करने से कृमि की संख्या में कमी होती है एवं उपज में लाभ होता है।

***